ग्यारहवाँ अध्याय
ऊदी के चमत्कार

अपने पूर्व जन्म के कर्मो के कारण ही प्रत्येक मनुष्य को इस जन्म में सुख-दु:ख भोगने पडते है, यह सिद्धान्त श्री साई महाराज ने अपने एक परम भक्त के समक्ष सिद्ध कर दिखाया था। श्री बाबा के भक्तों में डॉ. पिल्ले नामक एक सज्जन थे, जिन पर श्री बाबा की विशेष कृपा थी। वे स्वयं उन्हें 'भाऊ' नाम से पुकारते थे। वे सदैव उनके साथ विचार-विनिमय करते थे और अनेक अवसरों पर उनके परामर्श के अनुसार आचरण भी करते थे। एक बार डॉ. पिल्ले नारू की व्यथा से पीडित हुए। स्वयं डॉक्टर होने पर भी निरोग होने के उनके सारे प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए। वेदना इतनी असह्य हुई की डॉ.

साहब ने मर जाना ही श्रेयस्कर समझा। काकासाहेब दीक्षित को अपनी दु:ख भरी कहानी सुनाकर डॉक्टर साहब ने अपने पूर्व जन्म के कर्मो को दोष देते हुए कहा कि वे ओर दस जन्म लेकर दु:ख भोगने के लिये तैयार है, किन्तु इस समय तो श्री बाबा को उन्हे अवश्य बचाना चाहिये। एक दिन श्री बाबा को प्रसन्न मुद्रा में देखकर काकासाहेब ने धीरे से डॉक्टर साहब के रोग ग्रस्त होने की बात छेड दी। इस पर श्री बाबा बोले-''जाओ, उससे कह दो, चिंता करने की बात नही। पूर्व जन्मों के कर्मो के फल भोगने के लिए और दस जन्मों की क्या आवश्यकता है? इसी जन्म में अगले दस ही दिनों में वह अपने पूर्व कर्मो के दु:ख से मुक्त हो जायेगा। उसका दु:ख हरण कर उस शांति प्रदान करने के लिए मै समर्थ हूँ। अकारण ही मृत्यू को क्यों पुकार रहा है? किसी की पीठ पर लादकर उस यहाँ ले आओ। देखो, उसका रोग एक चुटकी के साथ कैसे दूर करता हूँ।''

श्री बाबा की आज्ञानुसार डॉ. पिल्ले को उनके सामने लाया गया। श्री बाबा ने उन्हे अपनी दायी और जहाँ फकीर बाबा बैठा करते थे, बैठाया और अपना कंबल उन के आगे डालकर श्री बाबा ने कहा,''इस कंबल पर आराम से पडे रहो। तुम्हारे पूर्व जन्मो के पापों का फल तो तुम्हे भोगना ही पडेगा। अच्छे कर्मो से सुख मिलता है और बुरे कर्मो के कारण दु:ख भोगना पडता है। अब इस जन्म में निराश होने से कुछ नही बनेगा। सुखदु:ख शांति के साथ सहन करना चाहिये। ईश्वर में अविचल श्रद्धा रखो। वह दीनदयालु परमेश्वर सबकी रक्षा करेगा। अनन्य भाव से उसकी शरण में जाने से ही तुम्हारे पूर्व जन्मों के सारे पाप कर्म आपने आप धुल जायेंगे।''

रोग का कोई उपचार करने के स्थान पर श्री बाबा का यह प्रवचन सुनकर डॉक्टर पिल्ले दु:खी होकर बोले-''बाबा, आपका कहना ठीक ही है। परंतु अब इस क्षण तो मैं यह पीडा सहन नही कर सकता। नाना ने पैर पर भली-भाँति मरहम पट्टी तो की है; परंतु उसका कोई लाभ नही हुआ।''यह

सुनते ही श्री बाबा एकदम बरस पडे-''अरे, वह नाना तो मुर्ख है। यह कपडा तुरंत ही हटा दो, नही तो यों ही मर जाओंगे। अब ऐसे ही पडे रहो। अभी थोडी देर में ही यहाँ एक कौआ आएगा। वह तुम्हारे घाव पर चोंच मारेगा और फिर तुम बिल्कुल ठीक हो जाओंगे।''

इस प्रकार वार्तालाप हो ही रहा था, कि द्वारकामाई में नित्य बुहारी लगाने तथा सफाई का काम करने वाला अब्दुल शीघ्रता सेदियों मे तेल डालने के लिए वहाँ आ पहुँचा। डॉक्टर पिल्ले अपना पैर, जिस पर सूजन थी और नारू के कारण सात स्थानों पर घाव थे, पैर फैलाकर श्री बाबा के साथ वार्तालाप में स्वस्थ थे। जल्दी में होने के कारण असावधानीवश अब्दुल का पैर डॉक्टर साहब के घावों पर पड गया। डॉक्टर साहब असह्य वेदना से चीख पडे। परंतु, संयोग से इस दुर्घटना के कारण डॉक्टर साहब के सातों नासूर के फोडे फूट गए और उनमें से सात कीडे, पीब आदि सारी गंदगी बाहर निकल गई। कुछ क्षण तो डॉक्टर साहब असह्य वेदना से व्याकुल हो उठे, परंतु थोडी ही देर बाद वे कुछ स्वस्थ हो गए। कुछ और समय बीतने पर तो डॉक्टर साहब दु:ख दर्द भूलकर परमात्मा की स्तुति में गीत गाने लगे। मुस्कराते हुए उनकी ओर देखकर श्री बाबा बोले-''क्यो, रोग से मुक्ति पा कर अब गा रहे हो क्या?''

कृतज्ञतापूर्वक श्री बाबा ने चरणों मे अपनी दृष्टि झुकाए डॉक्टर साहब ने उत्तर दिया-''जी हाँ, अब बहुत कुछ ठीक हूँ। परंतु बाबा, अभी वह कौंआ चोंच मारने नही आया?''

''क्यो? कौआ देखा नही? अब वह फिर नही आयेगा। अपना अब्दुल ही तो वह कौआ था। जाओ, अब विश्राम करो।''

इस घटना के बाद कुछ दिन डॉक्टर पिल्ले ने किसी भी औषधि का उपयोग नही किया। केवल ऊदी के प्रयोग से ही उनका रोग संपूर्णत: दूर हो गया।

श्री बाबा की ऊदी में अद्वितीय सामर्थ्य भरा था, परंतु फिर भी वे स्वयं सफलता का कोई श्रेय नही लेते थे। प्रत्युत् परमेश्वर की अगाध लीलाओं की ओर संकेत कर स्वयं प्रसिद्धि से दूर रहने का प्रयत्न करते थे। शामा (माधवराव) जैसे उनके अत्यन्त प्रिय भक्त ने भी स्वयं अनुभव प्राप्त कर श्री बाबा के साथ इस संबंध में अनेक बार प्रश्नोत्तर किये है।

शामा (माधवराव) का छोटा भाई शिरडी के निकट ही रहता था। उसकी पत्नी एक बार प्लेग से पीडित हुई। ज्वर ने उग्र रूप धारण किया और दोनो और प्लेग की गुठलियाँ उभर आई। बापाजी बहुत घबराया और तुरंत शामा के पास भागा-भागा पहूँचा। शामा को श्री बाबा के चमत्कारों का अनुभव था। अत: तनिक भी न घबराते हुए वे बाबाजी को साथ ले श्री बाबा के चरणों में झुक गए और उनसे अपनी भाभी के पास जाने की आज्ञा माँगी। पहले तो री बाबा क्रोधित हो उठे और चिल्ला कर बोले-''इतनी रात हुए वहाँ जाने की बिल्कुल आवश्यकता नही। उसे मेरी ऊदी भिजवा दो, ज्वर और गुठलियाँ तुरंत ही एक चुटकी के साथ दूर भाग जायेंगी। वह दयाधन परमेश्वर ही उसका सच्चा रक्षक है। वह उस अच्छा करेगा। तुम कल प्रात:काल वहाँ जाना और शीघ्र वापस आ जाना।''

श्री बाबा की अनुमति के बिना कही आना-जाना एक भयंकर अनिष्ट को निमंत्रण देना होता है, यह शामा अपने अनुभवों के आधार पर भली-भाँति जानते थे। उन्होंने बापा जी को ऊदी दे कर रवाना कर दिया। बापाजी ने घर पहूँचते ही ज्वर से व्याकुल अपनी पत्नी को ऊदी-मिश्रित जल पिलाया और प्लेग कि गाँठ पर भी ऊदी का लेप किया। थोडी ही देर बाद उसके शरीर से पसीना बहने लगा। ज्वर दूर हुआ और रोग की पीडा से शांत होते ही बापाजी को पत्नी आराम से सो गई। दूसरे दिन प्रात:काल उस पूर्णत: रोग मुक्त होकर अपने गृहकार्य मे निमग्न देख स्वयं उसके पति बापाजी को भी बडा आश्चर्य हुआ। कुछ देर बाद शामा भी श्री बाबा की आज्ञा से वहाँ पहूँचे।

श्री बाबा की ऊदी का चमत्कार देखकर वह भी हक्का-बक्का रह गये और बडे उत्साह के साथ शिरडी लौटे।

शिरडी पहूँचते ही श्री साईनाथ महाराज के चरणों में मस्तक नत करते हुए शामा बोले-''देव! भक्तों के साथ इस प्रकार विचित्र खेल क्यों रचते हो? पहले तो आप एकदम कुपित हो उठते हो। भयंकर तुफान मचा देते है और फिर शान्त होकर भक्तो की रक्षा करते है, इसका क्या अर्थ है।''

श्री बाबा ने उत्तर दिया-''अरे, कर्म की गति अत्यन्त गूढ तथा विलक्षण होती है। मै स्वयं कुछ भी नहीं करता। प्रारब्ध के कारण ही प्राणी को सब कुछ भोगना पडता है। मै तो नाममात्र के लिए साक्षी हूँ। प्रत्येक प्राणी के लिए जो उचित है, वही करने के लिए सर्व शक्तिमान प्रभू स्वयं ही प्रेरणा देता रहता है। अल्ला मालिक, दया का सागर है। मै न ही देवदूत हूँ और न ही परमात्मा। मैं तो उसका बंदा गुलाम हूँ। परमेश्वर में मेरी जैसी ही अविचल श्रद्धा रखो। अपने मिथ्या अभिमान को त्याग कर मन में सदैव परमेश्वर का स्मरण रखो और उस पर मन में दृढ विश्वास रखो। ऐसा करने से तुम्हारी हाथ -पैरों मे पडी हूई माया की श्रृंखलाओं वासुदेव की श्रृंखलाओं की भाँति तडक से टूट जाएँगी और तुम्हारा जन्म-जन्म के लिए कल्याण होगा।'' शामा के मन में जिस सहज शंका ने घर लिया था, उसका श्री बाबा ने पूर्ण समाधानकारक उत्तर दिया, उससे श्री बाबा की आत्म-तृप्तस्थिति और परमेश्वर में उनकी अटूट श्रद्धा का पूरा परिचय भक्तों को मिल जाता है।

श्री साईनाथ महाराज ने चाहे किसी में स्वयं कितनी भी तन्मयता प्रकट की हो, वास्तव की हो, वास्तव में यह उनके मन की विशालता ही सिद्ध करती थी। भक्तो की प्रत्यक्ष अनुभवों से किसी के भी मन में यही अटल धारणा बनती थी की साई महाराज की दिव्यता में प्रतिक्षण चंद्रमा की भाँति ही वृद्धि हो रही थी और इसलिए केवल उनकी ऊदी ने ही अनेक अलौकिक चमत्कार कर दिखाये है।

हरदा के एक वृद्ध गृहस्थ का पथरी जैसा कष्टदायक रोग केवल ऊदी-मिश्रीत जल से ही नष्ट हुआ। बम्बई के पाढेरे प्रभू जाति के एक सद्गृहस्थ की पत्नी को प्रसव-काल के समय सदैव बडा कष्ट होता था। संयोग से कल्याण के सुप्रसिद्ध सत्पुरूष श्री राममारूती महाराज ने उन्हे शिरडी में श्री साई महाराज का दर्शन कर आने का परामर्श दिया। दिन पूरे होते ही उक्त सज्जन की पत्नी शिरडी मे वास करने के लिए गई। कुछ दिनों के पश्चात जब प्रसव-काल निकट आया तो सदैव की भाँति उसे महान वेदना हुई। भक्त लोंगो ने श्री बाबा को उसके रोग का सारा वृत्तान्त सुनाया और श्री बाबा ने उसे ऊदी जल में घोलकर पिला दी। ऊदी-मिश्रित वह जल उदर में पहूँचते ही केवल पाँच ही मिनटों के पश्चात वह कुशलतापूर्वक प्रसव पीडा से मुक्त हो गई।

श्री बाबा की ऊदी शक्ति का अनुभव हजारों भक्तों को हो चुका है। इन अनुभवों की विविधता और उनमें निहित निराली भावना से भक्तो को भली भाँति परिचित कराने के उद्देश्य से यहाँ कुछ और चमत्कारों का उल्लेख किया जाता है।

बांद्रा मे रहने वाले कायस्थ प्रभु जाति के एक सज्जन अनिद्रा के रोग से ग्रस्त थे। नित्य प्रति निद्रा आते ही उनके कुछ ही दिन पूर्व स्वर्गवासी हुए पिता स्वप्न में आकर उन्हें अकारण ही बुरी तरह गालियाँ दिया करते थे। इससे उन्हें सारी रात नींद बिना बेचैनी से व्यतीत करनी पडती थी। यह घटना रात्रि को नित्य होने लगी। इस कारण उनके स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा प्रभाव पडा और वे एक रोग-ग्रस्त मनुष्य की भाँति दीखने लगे। निद्रा के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की औषधियों का प्रयोग करते करते वे थक गए और अन्त में इस शंका से वे भयग्रस्त हुए कि कही पागल न हो जायें। संयोग से इस समय उनकी एक साई भक्त से भेंट हुई। उसने श्री साई महाराज की ऊदी के दिव्य चमत्कारों का वर्णन कर शिरडी से विशेषत: लाई हुई ऊदी उन्हें दे दी। उस रात को शयन से पूर्व वे श्री साई महाराजं का नाम स्मरण कर मस्तक पर

ऊदीधारण कर सो गए। सारी रात्रि उन्हे किसी कष्टके बिना शांत तथा गहन निद्रा का सुख मिला। लाखों रूपये की सुवर्ण राशि भी यदि उस समय उनके हाथ आती तो उन्हें उतना हर्ष न होता, जितना कि उस रात सोने से हुआ। उनके मन में श्री बाबा के लिए अविचल श्रद्धा उत्पन्न हुई। तुरंत ही उन्होंने दुकान से श्री साई महाराज का रंगीन चित्र खरीद लिया और उस दिनसे उन्होनें हर बृहस्पति वार से श्री साईनाथ महाराज की आरती तथा पूजा करने का अखण्ड नियम आजीवन निभाया।

शिरडी में जब श्री साई महाराज का वास रहा, तब वहाँ आए हुए भक्तों को अपनी ऊदी के सामर्थ्य से हर कार्य में वे सहायता पहूँचाते रहे। केवल ऊदी के द्वारा अनेक असाध्य रोगों का उन्होनें समूल नाश किया। भूत-बाधा से ग्रस्त लोगों की उन्होंने ऐसे ही रक्षा की, जैसे कोई महान अगाध समुद्र में ग्राह के मूँह में फँसे व्यक्ति को बचा लेता है। श्री बाबा ने सच्चे मुमुक्षुओं के मन में ऊदी ही दिव्य भस्म है, इस कल्पना की विकास कर और प्रपंच में फँसे हुए उनके संवेदनशील मन को परमेश्वर प्राप्ति का, नित्यानंद स्वरूप की उपलब्धि का सत्य मार्ग दिखा दिया। श्री बाबा की ऊदी ने इस प्रकार के विविध चमत्कार कर दिखाये थे।

शिरडी को तो आज एक संस्थान का स्वरूप प्राप्त हुआ है। वहाँ भक्त मंडली ने भाँति भाँति के उत्सव-समारोह मनाने की परिपाटी आरम्भ की है। ऐसे ही श्राद्ध-समारोह के दिन उपस्थित लोगों का भण्डारा करने के समय जब मिष्टान्न के लिए सारी सामग्री जुटायी गई तो श्रीमती नेवासकर को जिन्हें भोजन की व्यवस्था करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्त्व सौंप दिया गया था, यह देखकर चिंता हुई की भोजन के लिए निमंत्रित लोंगों से भी अधिक संख्या में लोग उपस्थित हुए है। जब श्रीमती नेवासकर इस दुविधा में पडी थी की इतनी थोडी सामग्री से इतनी भारी संख्या में उपस्थित लोगों की उदरपूर्ति किस प्रकार संभव होगी तो उनकी सास ने उन्हें श्री बाबा का नाम स्मरण

करने का परमर्श दिया और स्वयं अपने हाथ से एक -एक चुटकी ऊदी लेकर भोजन के प्रत्येक पात्र में डालकर उसे ऊपर से वस्त्र से ढँक दिया। फिर श्रीमती नेवासकर ने भोजन-पात्रों में न झांकते हुए भोजन परोसने का कार्य आरम्भ किया। सायंकाल तक कितने ही लोग भोजन करके चले गए, परंतु फिर भी भोजन - सामग्री पर्याप्त मात्रा में शेष रह गई। ऊदी के इस चमत्कार का श्रीमती नेवासकर ने प्रत्यक्ष अनुभव किया था।

इसी प्रकार अहमदनगर जिले के कर्जत गाँव के प्रथम श्रेणी के न्यायाधीश श्री चौगुले ने भी स्वयं अनुभव किए हुए एक चमत्कार का उल्लेख किया है। वहाँ एक सार्वजनिक पूजा तथा उत्सव के अवसर पर निमन्त्रित संख्या से लगभग पाँच गुने अधिक लोग एकाएक ही भोजन के लिए उपस्थित हुए। पर श्री बाबा की कृपा से इतनी बडी संख्या में लोंगो के आने पर भी भोजन की जरा भी कमी अनुभव न हुई और सभी उपस्थित लोग वहाँ से यथेच्छ भोजन कर लौटे।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋